Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> पेम घटारण सजना रो, दुरगत नो दातार।
> अण चिंतव्या अनर्थ करें, धन ने पड़ो धिकार।।
>
> जो स्वजनों के प्रेम को घटाता है, जीवन की दुर्गति करता है, अचिन्तित अनर्थ पैदा करता है, ऐसे धन को धिक्कार।
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली / ● वर्ष 27 ● अंक 05 ● 03 नवम्बर - 09 नवम्बर, 2025 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 01-11-2025 ● पेज 12 | ₹ 10 रुपये

भय की स्थिति में भी रहे अभय का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

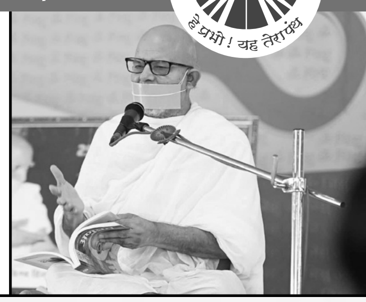

मनोज्ञ और अमनोज्ञ दोनों शब्दों को सहन करे साधु : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

संयम का सुख है देवलोक के सुख से भी बढ़कर : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर ने सन् 2033 का चातुर्मास एवं सन् 2034 का मर्यादा महोत्सव बीदासर में करने की घोषणा

कोबा, गांधीनगर।

26 अक्टूबर, 2025

संयम रत्न प्रदाता, वीतराग साधक जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में इस चातुर्मास का दूसरा दीक्षा समारोह आयोजित हुआ।

70 वर्षीय प्रवक्ता उपासक हनुमानमल दूगड़ अपने पूरे परिवार को छोड़कर, भौतिक सुख-सुविधाओं को त्याग आत्मकल्याण और अध्यात्म पथ की ओर अग्रसर हुए। उदित, मुदित और कल्प ने दीक्षार्थी का परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंगलाल जैन ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। गुरु चरणों में मुमुक्षु हनुमानमल के पुत्र हेमंत और नितेश ने आज्ञा पत्र उपरित किया। दीक्षार्थी हनुमानमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

तत्पश्चात साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुनि दीक्षा स्वीकार करने वाला आजीवन प्रत्येक प्रकार की हिंसा का परित्याग करता है। यह बहुत बड़ा संकल्प है। असत्य संभाषण नहीं करना और यावज्जीवन अब्रह्मचर्य, चोरी और परिग्रह का भी त्याग करना बहुत बड़ी बात होती है। जब व्यक्ति की इंद्रियां अंतर्मुखी बन जाती हैं, जब मन की चंचलता समाप्त होने लग जाती है और व्यक्ति के कषाय उपशांत हो जाते हैं तभी वह संन्यास के मार्ग में आगे बढ़ने का प्रयत्न कर सकता है।

पावन प्रेरणा पाथेय में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि संयम का सुख देवलोक के सुख से भी बढ़कर होता है।

(शेष पेज 9 पर)

दीक्षार्थी हनुमानमल बने मुनि हेम ऋषि

तत्पश्चात दीक्षा संस्कार प्रारंभ करते हुए आचार्य प्रवर ने आगम पाठ द्वारा दीक्षार्थी हनुमानमल दूगड़ को जैसे ही जैन भगवती दीक्षा प्रदान की, पूरा पांडाल हर्षध्वनि से गूंजायमान हो उठा। आचार्य प्रवर ने नवदीक्षित का केशलोंच संस्कार किया। आर्षवाणी के उच्चारण के साथ साधुत्व चर्या का अभिन्न अंग 'रजोहरण' नवदीक्षित को प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने दीक्षार्थी को 'मुनि हेम ऋषि' नाम प्रदान किया। प्रेक्षा विश्व भारती में हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में इन ऐतिहासिक पलों ने पूरे अहमदाबाद को भावविभोर कर दिया।

प्रतिकूल और अनुकूल परिस्थिति में समता का भाव है साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।

25 अक्टूबर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि सहन करना एक महान साधना है। व्यक्ति को प्रतिकूल परिस्थितियों को समभाव से सहन करना चाहिए और अनुकूल परिस्थितियों में भी शांत रहने का प्रयास करना चाहिए — यही सहिष्णुता का लक्षण है।

उन्होंने कहा कि जीवन में कठिनाइयाँ न आएँ, यह संभव नहीं है। बड़े-बड़े महान व्यक्तियों के जीवन में भी संघर्ष और विपरीत स्थितियाँ आती रही हैं। कठिनाई आने पर उसका बचाव करना तो उचित है, परंतु मन में समता और मनोबल बनाए रखना और भय से बचना भी साधक का कर्तव्य है।

आचार्यश्री ने कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी निर्भीकता, समता और शांति का भाव रखना साधना का अंग है। साधना में सफलता के लिए समता का विकास आवश्यक है। साधु के लिए तो सहनशीलता अनिवार्य है, किंतु गृहस्थ जीवन में भी सहनशक्ति का विकास उतना ही आवश्यक है। सहिष्णुता गृहस्थ जीवन में शांति और क्षेम का आधार है।

उन्होंने कहा कि जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों आती रहती हैं। व्यक्ति को दोनों ही परिस्थितियों में समता, शांति और सहिष्णुता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। भगवान महावीर के जीवन से इसका अनुपम उदाहरण मिलता है — चाहे चण्डकौशिक सर्प का परीषह हो, शूलपाणि यक्ष की परीक्षा या ग्वाले का व्यवहार, हर परिस्थिति में भगवान महावीर समता में स्थित रहे। इसी प्रकार आचार्य भिक्षु का जीवन भी समता और सहनशीलता का जीता-जागता उदाहरण है। आचार्यश्री ने कहा कि कठिनाई का आना सामान्य बात है, पर उसे समता भाव से सहन करना ही बड़ी साधना है। पारिवारिक, सामाजिक या स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों के बीच भी मन की शांति बनाए रखना और यथाशक्ति तप साधना करते रहना चाहिए।

(शेष पेज 9 पर)

विनीत, आत्मानुशासी, सुश्रृंखल बन जीवन में कठिनाइयों का करें सामना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
27 अक्टूबर, 2025

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वांग्मय पर आधारित अपनी अमृतदेशना में कहा कि जो व्यक्ति अविनीत, अनुशासनहीन, उच्छृंखल और उद्दण्ड होता है, उसे विपत्ति प्राप्त होती है; जबकि विनीत, आत्मानुशासी और सुश्रृंखल व्यक्ति को संपत्ति और सफलता की प्राप्ति होती है।

आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में विपत्तियां और संपत्तियां दोनों आ सकती हैं, परंतु दुर्गुणों के कारण प्राप्त विपत्ति त्याज्य होती है। कभी-कभी अच्छे कार्य करते हुए भी कठिनाइयां आती हैं— ऐसी स्थिति में व्यक्ति को समता भाव, साहस, मनोबल और सूझबूझ के साथ उनका सामना करना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि एक प्रकार की विपत्ति दुर्गुणों और अनुशासनहीनता के कारण आती है, जबकि दूसरी विपत्ति शुभ कर्म करते हुए भी आती है। इसलिए व्यक्ति को अविनीत और उच्छृंखल नहीं बनना चाहिए।

राजतंत्र हो या लोकतंत्र, अनुशासन दोनों के लिए आवश्यक है। दूसरों पर अनुशासन लगाने से पहले स्वयं पर अनुशासन होना चाहिए। 'निज पर शासन, फिर अनुशासन।' मन, वचन, शरीर और इंद्रियों पर नियंत्रण ही आत्मानुशासन है। बोलने से पूर्व विचार करें – क्या बोलें, कैसे बोलें और क्यों बोलें। वाणी में मृदुता और मर्यादा होनी चाहिए। इंद्रिय अनुशासन का अर्थ है – आंख से बुरा न देखो, कान से बुरा न सुनो, मुख से बुरा न बोलो और मस्तिष्क से बुरा न सोचो। अच्छा देखना, सुनना, बोलना और सोचना – ये चार बातें जीवन को सही दिशा देती हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि जो व्यक्ति अच्छे कार्य करता है वह विनीत होता है, और जो बुरे कार्य करता है वह अविनीत होता है। संयम और तप ही आत्मानुशासन के वास्तविक साधन हैं। अणुव्रत आंदोलन आत्मानुशासन का ही आंदोलन है, जो व्यक्ति को अहितकर चीजों से दूर रहने, ईमानदारी और प्रामाणिकता से जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यदि व्यक्ति के जीवन में अच्छे संस्कार हों तो जीवन, चेतना और भाव – तीनों विशुद्ध हो जाते हैं, और यदि परलोक है तो वह भी उज्जवल हो सकता है।

परम पूज्य आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय का 16वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ, जिसमें विद्यार्थियों को पीएचडी सहित विभिन्न डिग्रियां प्रदान की गईं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यावरण मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने जैन दर्शन के अनेकांत, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कुलपति प्रो. दूगड़ ने विश्वविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और स्वागत भाषण दिया। मंच संचालन प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी एवं राजेश ओझा ने किया।

भय की स्थिति में भी रहे अभय का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
24 अक्टूबर, 2025

सब जीवों को अभय प्रदान करने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु विशेष साधना करता है, श्मशान में जाकर प्रतिमा की आराधना करता है। यदि वहां भयंकर दृश्य भी दिखाई दें, तो भी साधु को भयमुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि हमारे भीतर भय की संज्ञा भी होती है। जैन वाङ्मय में चार संज्ञाएं बताई गई हैं, आगम में दस संज्ञाओं का भी उल्लेख मिलता है, जिनमें एक है — भय संज्ञा। सबका भय एक समान नहीं होता; कुछ व्यक्ति अभय भी होते हैं। अभय का अर्थ है वीरता, जबकि डरना कमजोरी का प्रतीक है। व्यक्ति को यथासंभव अभय भाव बनाए रखना चाहिए। कोई भी परिस्थिति आ जाए, परंतु झटपट भयभीत न हो। दीपक समान अभय का प्रकाश हमारे जीवन में सदैव रहना चाहिए। अभय की साधना एक उच्च उपलब्धि है।

उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य को बीमारी, मृत्यु, बदनामी, अपमान या प्राणियों से भय लग सकता है। इन सभी भय की स्थितियों में भी यदि व्यक्ति अभय भाव रखे, तो यह अत्यंत ऊंची साधना मानी जाएगी। भय सात्विक और असात्विक दोनों प्रकार का होता है। एक सीमा तक सात्विक भय हितकारी भी हो सकता है, जैसे शिष्य को गुरु का भय, समाज का भय, या पाप का भय — ये सभी सात्विक भय हैं।

आचार्यश्री ने बताया कि मोहनीय कर्म के परिवार में 28 सदस्य हैं, जिनमें एक है भय। मोहनीय कर्म हमारी चेतना को प्रभावित करता है, जिससे भय की संज्ञा उत्पन्न होती है। कभी-कभी किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति को देखकर भी भय पैदा हो जाता है; ऐसी स्थिति में अभय का भाव बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। प्रेक्षाध्यान साधना में 'अभय अनुप्रेक्षा' का प्रयोग इसी उद्देश्य से किया जाता है। कुछ व्यक्तियों में सहज रूप से अभय का भाव होता है, परंतु अभय के साथ विनय भी आवश्यक है। कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनके प्रति श्रद्धा होने पर उनका नाम लेने मात्र से भी मनोबल और रक्षा का भाव जाग्रत होता है — जैसे ऊँ भिक्षु, भिक्खू स्याम का जप। जब भीतर पूर्ण अभय का भाव जाग्रत हो जाए, तो वह अत्यंत ऊँची साधना की अवस्था है। किंतु सामान्य स्थिति में भी भय आने पर व्यक्ति को अभय भाव बनाए रखना चाहिए।

मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मन की गति सबसे तीव्र होती है। जो व्यक्ति मन को नियंत्रित कर लेता है, वह स्वयं को जीत लेता है। मनुष्य चैतन्य प्राणी है, उसकी चिंतनशीलता विकसित है।

सांसारिक जीवन में सुख-दुःख दोनों आते हैं, परंतु कठिनाई की स्थिति में नकारात्मक चिंतन से बचना और धैर्य बनाए रखना चाहिए।

प्रवचन के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों को अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया और उनका समाधान किया। आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में अणुविभा द्वारा वर्ष 2025 का अणुव्रत गौरव सम्मान भीखमचंद नखत को प्रदान किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दूगड़ और सम्मानित भीखमचंद नखत ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया।

ज्ञान का दीप जीवन पथ को करता रहे प्रकाशित

सूरत।

तेरापंथ सभा भवन में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में ज्ञान दीप ज्योति विषयक प्रबुद्ध जन सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में जैन स्कोलर, जीवन विज्ञान, एमए जैन दर्शन, तत्व विज्ञ, तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन प्रचेता, जैन विद्या आदि करने वाले व्यक्तित्वों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा आज एक विशेष कार्यक्रम है। ज्ञान की ज्योति जीवन पथ को रोशन करती है विवेक चेतना को उद्घाटित करती है। ज्ञान समंदर में अवगाहन करने वाला अमूल्य मोती के रूप में जिन्दगी को सरस बनाने वाले सूत्रों को प्राप्त कर लेता है।

उन्होंने कहा कि हमारे धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी योग्यता, रूचि से अलग-अलग विषय क्षेत्र में प्रवेश कर पुरूषार्थ से ज्ञान अर्जन किया। यह क्रम निरन्तर चल रहा है, यह शुभ भविष्य का सूचक है। श्रावक समाज अपनी प्रबुद्धता का आत्म कल्याण, परकल्याण में उपयोग भी कर रहे हैं। इसका हमें गौरव भी है। ज्ञान के प्रति श्रद्धाभाव और निरन्तरता बनी रहे। आवश्यकता इस बात की है कि ज्ञान जीवन व्यवहार में उतरे।

महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष प्रतिभा बोथरा ने स्वागत संभाषण किया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा ज्ञान चेतना का विकास आनन्द शांति और शक्ति का संप्रेषण करता है। साध्वी वृंद ने सामूहिक संगान किया।

जैन स्कोलर कनक बरमेचा ने कहा साध्वी प्रोफेसर डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने सूरत में इस नूतन कार्यक्रम की शुभ शुरूआत कर प्रबुद्धता को प्रोत्साहित किया है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से मधु देरासरिया ने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की संयोजिका अल्का सांखला, राजू दुगड़, महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्षा चन्दा भोगर एवं कनक बरड़िया की सक्रियता सराहनीय रही।

ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया, भावना सोलंकी ने श्रुत के दम पर खजाने के रूप में 10 भव बनाए। जिसमें संयम ग्रुप ने प्रथम, लाघव ग्रुप ने द्वितीय और मुक्ति ग्रुप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अल्का सांखला ने संयोजन और महिला मंडल मंत्री बिन्दु भंसाली ने आभार ज्ञापन किया।

मासखमण तप अभिनंदन का भव्य आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में राजलक्ष्मी दुगड़ एवं वैकुण्ठ नाहटा के मासखमण तप पर अभिनंदन समारोह का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा— 'जैन धर्म में तप का विशिष्ट महत्व है। तप से अतीत के पाप कर्मों का प्रक्षालन होता है, अनागत की वासनाओं का विसर्जन होता है और वर्तमान में आत्मशक्ति का प्रवर्धन होता है।

तप से देह-संवेदनाओं का सम्यक विसर्जन होता है तथा कर्मों की अपूर्व निर्जरा होती है। जीवन-जागरण, आत्मशोधन, बंधन-मुक्ति, मानसिक एकाग्रता, इंद्रिय-शमन और स्वभाव-परिवर्तन तपस्या के फल हैं। तप अक्षय शिव-सुख की उपलब्धि का साधन है।' उन्होंने कहा कि चातुर्मास में तपस्या का निर्झर निरंतर बह रहा है। राजलक्ष्मी दुगड़ एवं वैकुण्ठ नाहटा ने मासखमण तप कर अद्भुत मनोबल और आत्मबल का परिचय दिया है। पूर्वांचल चातुर्मास में अब तक मासखमण व उससे अधिक की कुल 15 तपस्याएँ हो चुकी हैं। मुनिश्री ने दोनों तपस्वियों की सराहना करते हुए उनके प्रति मंगलकामना की।

इस अवसर पर स्वागत भाषण पूर्वांचल सभा अध्यक्ष संजय सिंघी ने दिया। साध्वी प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल की उपाध्यक्ष विनीता बरमेचा एवं मंत्री नीता बोथरा ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन पारसमल बच्छावत और मुकेश पुगलिया ने किया। तप अभिनंदन में कलकत्ता सभा अध्यक्ष अजय भंसाली, मध्य-उत्तर कोलकाता अध्यक्ष पारसमल सेठिया, उपासक झब्बरमल दुगड़, श्रेयांस नाहटा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तप अनुमोदना में रीना नाहटा एवं परिवार की बहनों के साथ भूरामल सामसुखा और मोतीलाल विनायकीया ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पंकज डोसी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी एवं संगठन मंत्री हंसमुख मुथा ने संयुक्त रूप से किया।

'हेल्थ इज़ वेल्थ' विषयक सेमिनार का आयोजन

बीकानेर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, बीकानेर के तत्वावधान में खेतेश्वर बस्ती स्थित संत तुलछाराम महाराज माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में 'हेल्थ इज़ वेल्थ' विषयक सेमिनार का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. संगीता जैन ने अत्यंत रोचक शैली में विद्यार्थियों को उत्तम स्वास्थ्य की महत्ता एवं आदर्श जीवनचर्या के सूत्र बताए। उन्होंने व्यक्तिगत स्वच्छता, संतुलित भोजन, जंक फूड से बचाव, तथा प्रतिदिन कम से कम 40 मिनट खेलकूद हेतु प्रेरित किया। साथ ही, मानसिक स्वास्थ्य व बीमारियों से बचाव के व्यावहारिक उपाय बताए तथा सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं व टीकाकरण की जानकारी दी।

सेमिनार का शुभारंभ विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी एवं कहा कि उत्तम स्वास्थ्य ही सफलता का आधार है — 'पहला सुख निरोगी काया'। टीपीएफ मंत्री अजीत संचेती और कार्यक्रम संयोजक देवेंद्र डागा ने विद्यार्थियों से स्वास्थ्य विषयक प्रश्नोत्तरी आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य छोटूलाल पड़िहार ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए ऐसे प्रेरणादायी कार्यक्रमों के पुनः आयोजन का आग्रह किया।

इस अवसर पर संजना शर्मा, रेखा सुथार, पायल राजपुरोहित, अंजली कुमारी सहित समस्त स्टाफ एवं 200 से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता दर्ज की। संस्था द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्य और मुख्य वक्ता डॉ. संगीता जैन का पताका व साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, दिल्ली।

तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर, दिल्ली में तेयुप गांधीनगर-दिल्ली एवं तेरापंथ किशोर मंडल, गांधीनगर-दिल्ली द्वारा, बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत का संगान हुआ। तेयुप अध्यक्ष क्रांति बरड़िया ने स्वागत भाषण देते हुए उपस्थित सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविका समाज और युवाओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार एवं तेयुप परामर्शक जतन श्यामसुखा द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा — 'भिक्षु केवल एक वेशधारी नहीं, बल्कि तप, त्याग और तत्त्वचिंतन का साक्षात स्वरूप थे।' मुनिश्री ने भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों का सरलता से प्रतिपादन किया।

कार्यशाला में गांधीनगर सभा, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल, विकास मंच परिवार, तेयुप संस्थापक अध्यक्ष, परामर्शकगण, पदाधिकारीगण, युवा साथी तथा किशोर मंडल सदस्यों सहित श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन सहमंत्री द्वितीय राजेश सेठिया ने किया तथा कार्यशाला का कुशल मंच संचालन मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया।

नशामुक्त युवा कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर। अणुव्रत समिति और तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा युवा समिट और नशा मुक्त युवा कार्यशाला का तुलसी निकेतन में आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत अणुव्रत गीत से प्रारंभ हुई। स्वागत उद्बोधन अणुव्रत समिति अध्यक्षा प्रणिता तलेसरा ने किया। पी.सी. जैन ने युवाओं को आगे बढ़ने और नशा मुक्त रहने की प्रेरणा दी। मंच संचालन गगन तलेसरा द्वारा किया गया। तेरापंथ युवक परिषद की ओर से पंकज भंडारी ने अपने विचार व्यक्त किए और अणुव्रत गीत का संगान किया।

परिक्रमा 25 बोल की प्रतियोगिता का आयोजन

मैसूर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य में मैसूर स्थित तेरापंथ भवन में 'परिक्रमा 25 बोल की' प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें 15–75 आयुवर्ग के 40 श्रावक श्राविकाओं ने कुल 10 टीमों में उत्साह पूर्वक भाग लिया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा –आचार्य प्रवर ने महती कृपा कर 2025 में 25 बोल सीखने की प्रेरणा फरमाई। यह 25 बोल जैन तत्वज्ञान का प्रवेश द्वार है। हमें प्रसन्नता है कि इस चातुर्मास में कई बच्चों से लेकर 75 वर्ष तक के आयु के श्रावकों में नए रूप में 25 बोल को कंठस्थ कर लिया। यह प्रतियोगिता ज्ञान विकास और प्रैक्टिकल परीक्षा का माध्यम है। कार्यक्रम दो लेवल में आयोजित हुआ। प्रथम लेवल में पांच रोचक राउंड थे तथा लेवल 2 में धुन, एक तीर से दो निशाना, पिरामिड जैसे नवीन और प्रतिस्पर्धक राउंड ने पूरी सभा को जोड़ लिया। प्रत्येक प्रतिभागी को उत्तर देना अनिवार्य था। कार्यक्रम में प्रथम स्थान पर टीम जीतमल, द्वितीय स्थान पर नंजनगुड से समागत टीम महाप्रज्ञ और तृतीय स्थान पर टीम मगवागणी रहे। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दिलीप पितलिया ने किया। सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, तेयुप अध्यक्ष प्रमोद मुणोत, तेममं अध्यक्षा विजयलक्ष्मी आच्छा ने प्रतिभागियों को पुरुस्कृत किया।

बुद्धि विकास अनुष्ठान का भव्य आयोजन

सूरत।

विद्यालय, कॉलेज, सीए, एमए आदि शिक्षा से जुड़े अध्ययनार्थियों के लिए तेरापंथ भवन सिटीलाइट में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा बुद्धि विकास अनुष्ठान करवाया गया। अनुष्ठान में संभागी विशाल परिषद को साध्वीश्री ने बीज मंत्रों के साथ मंत्र साधना करवाई एवं शिक्षा संवर्धन हेतु अनेक प्रयोग बताए। उन्होंने कहा ज्ञान का प्रकाश जीवन को आनंद, शक्ति और शांति का पथ दिखाता है। जैन परम्परा में अनेक जैनाचार्यों ने विद्या की उपासना में मंत्रों की साधना की है। छोटा सा बीज विशाल बरगद का हेतु बनता है- इसी तरह एकाक्षरी, द्वाक्षरी बीज मंत्रों सहित मंत्राराधना ज्ञान विकास में प्रबल सहायक बनती है।

प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि भारतीय ऋषियों एवं द्रष्टा पुरूषों ने प्रज्ञा बल से जो ज्ञान खोजा उसे विज्ञान लेबोरेट्री में खोजन का प्रयास कर रहा है। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा गुरू द्वारा प्रदत्त मंत्र ज्ञान विकास में प्रवर सहायक बनते हैं, शक्ति संवर्धन करते हैं।

ज्ञान विकास के लिए संकल्प और आत्म विश्वास का होना भी आवश्यक है। ज्ञानार्थियों को ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एकाग्रता और ग्रहण शक्ति बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर उपस्थित अभिभावकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि हर अभिभावक अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें। सकारात्मक सोच के साथ उनका हौंसला बुलंद करें, हेलीकाप्टर की तरह मंडराये नही। उनमें साहस भरे उनकी क्षमताओं को प्रेरणा से विकसित करने का प्रयत्न करें। विधार्थी भी मोबाईल, टी.वी. आदि का यथासंभव कम प्रयोग करे। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने बुद्धि विकास अनुष्ठान मंगलकामना गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाया।

शरद पूर्णिमा पर मंत्र अनुष्ठान

विजयनगर, बैंगलोर।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में शरद पूर्णिमा के अवसर पर विशेष मंत्रों के उच्चारण के साथ महाअनुष्ठान का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, विजय नगर द्वारा अर्हम भवन के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर साध्वी श्री ने कहा शरद पूर्णिमा समृद्धि, वैभव, मानसिक शांति प्रदान करने वाला पर्व है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होकर धरती को अमृतमयी करने बरसता है। इस पर्व पर किए गए मंत्र अनुष्ठान से स्वास्थ्य लाभ, मानसिक शांति एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। साध्वी मार्दवश्री जी ने अनुष्ठान करवाने के साथ मुद्रा विज्ञान एवं स्वर विज्ञान की जानकारी देते हुए कहा कि जन्म पत्रिका में चंद्रमा ग्रह को तेजस्वी बनाने, स्थिरता प्रदान करने का श्रेष्ठ दिन है शरद पूर्णिमा। हम आज के दिन मंत्र अनुष्ठान, ध्यान, भजन, साधना के द्वारा अपनी सारी मनोकामनाओं को पूरा करने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का शुभारंभ मनीष पगारिया द्वारा मंगलाचरण के सुमधुर संगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष भंवर लाल मांडोत एवं आभार ज्ञापन पन्नालाल लुनिया ने किया। कार्यक्रम के सुंदर आयोजन में चिन्मय कोठारी का तकनीकी सहयोग एवं प्रकाश कोचर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

शारदीय पूर्णिमा अनुष्ठान का हुआ आयोजन

किलपॉक, चेन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, किलपॉक द्वारा मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में शारदीय पूर्णिमा अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस अनुष्ठान में उपस्थित साधकों ने मुनि जयेश कुमार जी के समुच्चारण के साथ जैन स्तोत्रों में निहित चंद्र संदर्भ के अनेक विशिष्ट श्लोकों का सामूहिक संगान किया।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने शरद पूर्णिमा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए चंद्रमा की महिमा का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए उपयोगी चंद्र मंत्रों का भी विवेचन किया।

इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि शरद पूर्णिमा का पर्व केवल धार्मिक उत्सव ही नहीं, बल्कि प्रकृति की स्वच्छता और सकारात्मकता का प्रतीक भी है। वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद इस दिन आकाश निर्मल होता है और वातावरण विषाक्तता से मुक्त रहता है, जिससे यह रात्रि आध्यात्मिक साधना के लिए अत्यंत फलदायी मानी जाती है। इसी कारण इस रात्रि को अमृतमयी कहा गया है। उन्होंने जैन स्तोत्रों में चंद्रमा के लिए प्रयुक्त विभिन्न पर्यायवाची नामों और उनके विशिष्ट गुणधर्मों की सारगर्भित व्याख्या प्रस्तुत की।

अनुष्ठान के अंत में साधकों ने मंत्रों के समुच्चारण के साथ श्वेत रंग की पवित्र अनुप्रेक्षा कर अलौकिक शांति और शीतलता की अनुभूति की।

वाद–प्रतिवाद प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

गंगाशहर।

शांति निकेतन सेवा केंद्र की व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल, गंगाशहर द्वारा वाद–प्रतिवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता का विषय था – 'सोशल मीडिया : व्यक्तिगत विकास में साधक या बाधक'।

निर्णायक की भूमिका जैन लूणकरण छाजेड़ एवं प्रो. धनपत रामपुरिया ने निभाई। तेयुप अध्यक्ष ललित राखेचा ने बताया कि सभी प्रतिभागियों ने पक्ष एवं विपक्ष में अपनी बात अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की। उपस्थित जनसमूह ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम वक्तृत्व कला को निखारने में सहायक होते हैं, अतः यह आयोजन अत्यंत सराहनीय है।

तेयुप मंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित हुई — प्रथम चरण में विचार प्रस्तुति, द्वितीय चरण में वाद–प्रतिवाद, तृतीय चरण में निर्णायकों द्वारा प्रश्नोत्तर के माध्यम से विचार मंथन किया गया।

इस अवसर पर निर्णायकों ने प्रतियोगिता के संबंध में अपने विचार रखे। साध्वी विशद प्रज्ञा जी ने भी विषय के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम बोथरा ने बताया कि अंतिम चरण में निर्णायकों द्वारा परिणाम घोषित किया गया, जिसके अनुसार सांत्वना पुरस्कार श्रेया गुलगुलिया, तृतीय स्थान वर्षा बोथरा, द्वितीय स्थान सुरभि नाहर, प्रथम स्थान सुनीता पुगलिया को प्रदान किया गया।

निर्णायकों का पताका एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप संगठन मंत्री रोहित बैद ने किया।

'कैसे हो पारिवारिक सामंजस्य' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में 'कैसे हो पारिवारिक सामंजस्य' विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने पारिवारिक सामंजस्य के लिए प्रेरणा देते हुए बताया कि परिवार को स्वर्ग किस प्रकार बनाया जा सकता है। उन्होंने अनेक विषयों पर उपयोगी टिप्स प्रदान किए। मुंबई से समागत उपासक एवं मोटिवेशनल स्पीकर सोहनलाल वडेरा ने इस विषय पर महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित वक्तव्य दिया। तूलिका गोगड़ ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी तथा प्रेक्षा कुमट ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सोहनलाल वडेरा का सभा द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया।

जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन

गांधीनगर, बेंगलोर।

डॉ मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन समण संस्कृति संकाय बेंगलुरु द्वारा गांधीनगर तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा जैन विद्या आध्यात्मिक विकास का उत्तम साधन है।

जैन विद्या का अध्ययन निर्जरा और ज्ञानार्जन करवाने वाला होता है। जैन दर्शन का विधिवत अध्ययन करने के लिए जैन विद्या परीक्षाएं पूरे भारत में आयोजित की जाती है। समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा जैन विद्या का अध्ययन लगभग 50 वर्षों से निरंतर भाग 1 से लेकर 9 तक करवाया जाता है।

मुनि श्री ने सभी को प्रेरणा देते हुए आगे कहा जैन विद्या परीक्षा देने के लिए श्रावक-श्राविकाओं में जागरूकता आनी चाहिए। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने प्रेरणादायी वक्तव्य दिया। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। मंत्री विनोद छाजेड़ ने वॉइस ऑफ तेरापंथ बेंगलुरु कार्यक्रम की जानकारी दी। जैन विद्या भाग 1 के टियाना जैन, जिया सेठिया, मीनल जैन, खुशी दूगड़, कृषा जैन, नेहा चावत, डिंपल सेठिया, जिया छाजेड़, भाग 2 के रीत नाहर, जानवी रायसोनी, हिया जैन, भाग 3 के अभिषेक पारख, दक्ष बांठिया, संयम छाजेड़, तनिस जैन भाग 5 के जय कोठारी, आदित्य सेठिया ,पीयूष नाहर को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। जैन विद्या प्रशिक्षिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया। गौतम डोसी, कमलेश पितलिया ने वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन हेमंत छाजेड़ ने किया।

इस अवसर पर जुगराज श्रीश्रीमाल, पारसमल डोसी, पारसमल नाहर, अमिचन्द खटेड़, प्रकाश कटारिया आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

29 की तपस्या कर साहस का दिया परिचय

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में प्रियंका रांका के मासखमण अनुमोदन का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मुनिश्री ने अपने उद्गार में बताया कि यह दिन आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की पुण्यतिथि का भी है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी तेरापंथ धर्मसंघ के दशवें आचार्य थे — विद्या, विनय और विवेक से संपन्न महान व्यक्तित्व। वे अपने गुरु के रहते हुए आचार्य बनने वाले पहले आचार्य थे। इस अवसर पर विमल चौरड़िया ने आचार्य श्री की स्तुति में चालीसा एवं गीत का संगान किया।

मुनिश्री ने कहा कि प्रियंका मूलतः 17 उपवास की तपस्या करना चाहती थीं, परंतु उनके उत्साह और स्वास्थ्य को देखकर मैंने उन्हें मासखमण का संकल्प दिया, जिसे उन्होंने सहजता से स्वीकार कर सफलतापूर्वक पूर्ण किया। उनकी तपस्या में पति जितेंद्र का नियमित सहयोग रहा — वे दर्शन और प्रत्याख्यान हेतु प्रतिदिन साथ रहते थे। प्रियंका ने सामायिक, जप और स्वाध्याय के साथ बाह्य–आंतरिक दोनों प्रकार की तपस्या की है। ऐसी साधनायुक्त, आडंबर-रहित तपस्या न केवल प्रसंसनीय बल्कि अनुकरणीय है।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के संदेश सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ ने पढ़कर सुनाया, जिसे महिला मंडल की पदाधिकारियों ने प्रियंका को समर्पित किया। पारिवारिक बहनों ने तप अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया तथा मुनि कमल कुमार जी ने भी प्रेरक गीतिका का संगान किया।

मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी में मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेक्षा-गीत के सामूहिक संगान से मंगलाचरण के रूप में किया गया। संस्थान के उपाध्यक्ष उत्तमचंद सुखलेचा

ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन को बनाए रखने के लिए भोजन और पानी आवश्यक हैं, परंतु जीवन का सबसे मूलभूत तत्त्व है – श्वास। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास में श्वास और विश्वास दोनों का विशेष महत्व है। यदि साधक विश्वासपूर्वक प्रयोग करे तो उसे निश्चित रूप से आत्मिक लाभ प्राप्त हो सकता है। मुनि धर्मेशकुमार जी ने शिविर का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि साधना का उद्देश्य जीवन के निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होना और आंतरिक शक्तियों का जागरण करना है।

शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन के माध्यम से साधक अनेक प्रयोगों द्वारा विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है, जिससे उसका आध्यात्मिक विकास और गहन होता है। इस अवसर पर संस्थान के अनेक पदाधिकारी एवं साधक उपस्थित रहे।

जैन विद्या परीक्षा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन उत्साह से संपन्न

जलगांव।

तेरापंथ सभा जलगांव के अंतर्गत जैन विद्या परीक्षा भाग 1 से 4 ऑनलाइन, भाग 5 से 7 ऑनलाइन एवं भाग 8 से 9 ऑफलाइन सानंद संपन्न हुई। निरीक्षक के रूप में स्थानीय सभा अध्यक्ष पवन सामसुखा, उपाध्यक्ष नोरतमल चौरडिया, महिला मंडल अध्यक्ष विनीता समदड़िया, युवक परिषद अध्यक्ष पंकज सुराणा, T.P.F.अध्यक्ष खुशबू बाफना, टेक्निकल विजन प्रमुख उमेश सेठिया व केंद्र व्यवस्थापिका भारती श्यामसुखा की उपस्थिति में प्रश्न पत्र का पैकेट खोला गया। जलगांव क्षेत्र में परीक्षा हेतु कुल 103 फॉर्म भरे गए, जिनमें से 98 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। उमेश सेठिया ने परीक्षाओं के लिए सेन्ट्रोनिक्स का स्थान उपलब्ध करा कर सहयोग दिया।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल, कोलकाता।** नेहा विनोद डागा के सुपौत्र एवं प्राची पवन डागा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश सिंघी ने मंत्रोच्चारण के साथ संपादित करवाया।

शिलान्यास/ उद्घाटन

■ **माधावरम, चेन्नई।** आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल, माधावरम (चेन्नई) के भिक्षु कैम्पस परिसर में 'उम्मेद सुशीला बोकड़िया स्पोर्ट्स अकादमी' का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक पदमचंद आँचलिया एवं स्वरूपचंद दाँती ने मंगल मंत्रोच्चार सहित संपन्न करवाया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन

महरौली, नई दिल्ली।

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। अनुशासन दिवस के अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा जीवन शैली सुन्दर बने, यह जरूरी है। बिना अनुशासन के जीवन की राहों को सुन्दरतम नहीं बनाया जा सकता। प्रकृति का कण-कण अनुशासित है, कहीं भी उल्लंघन होता है तो हाहाकार मच जाता है। जरूरी है अनुशासन से सजी जीवन बगिया सभी को सौरभ बांटती रहे। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा अनुशासन हमारा अस्तित्व है इसके बिना अंधेरा है, जीवन नीरस बन जाता है। साध्वी कल्याण यशा जी ने कहा 'निज पर शासन, फिर अनुशासन' गुरूदेव तुलसी का यह नारा प्राणी मात्र को अनुशासन में रहने की प्रेरणा देता है क्योंकि स्वयं अनुशासित हुए बिना दूसरों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा निरर्थक बन कर रह जाती है।

मुख्य अतिथि राजीव झा (लाइफ मून अकादमी के संचालक) ने कहा अनुशासन प्रकृति की एक विशेष देन है, जिसके चलते दुनिया का हर प्राणी, पेड़-पौधे, मौसम आदि अनुशासित देखे जा सकते हैं। जब-जब नियम टूटते हैं, बड़ी दुर्घटनाओं को अंजाम मिलता है। अर्थात अनुशासनहीनता से चारों तरफ हाहाकार मच जाता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा अनुशासन में रहने का पाठ सिखाया।

आचार्य तुलसी स्कूल के प्रिंसिपल अशोक कुमार ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि 4000 बच्चों का यह सरकारी स्कूल आचार्य तुलसी के नाम से विख्यात है। यहाँ के बच्चों को अणुव्रत के नियमों एवं जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए जाते हैं, तभी यहां के बच्चों में अनुशासन प्रियता देखी जा सकती है। अणुव्रत गीत का संगान तेरापंथ सभा के स्टाफ विश्वास सिद्धार्थ, श्याम, महेन्द्र, रश्मि आदि ने किया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के संयोजक संजय भाई अणुव्रती ने सभी का आभार व्यक्त किया। विमल गुनेचा ने विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि अणुव्रत अन्तः हृदय को प्रकाशित कर सत्य का मार्ग प्रशस्त करता है। राज गुनेचा ने अपने विचारों द्वारा अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डाला।

निःशुल्क रोग परामर्श शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम के तत्वावधान में मानव सेवा के तहत मदारिया जैन ओसवाल साजनान समाज स्नेह मिलन के अवसर पर, प्रिंसेस श्राइन, पैलेस ग्राउंड में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। इस अवसर पर मधुमेह, रक्तचाप, दंत परीक्षण एवं त्वचा संबंधी रोगों के लिए परामर्श सेवाएं प्रदान की गईं। ग्लूकोमीटर के माध्यम से रैंडम ब्लड शुगर और रक्तचाप की जांच की गई, जिसमें कुल 153 सदस्यों की जांच हुई।

त्वचा विशेषज्ञ डॉ. सुनील कुमार ने त्वचा रोगों का परामर्श प्रदान करते हुए 7 सदस्यों का परीक्षण किया, वहीं दंत विभाग के सहयोग से 63 सदस्यों का दंत परीक्षण एवं उपचार किया गया।

कुल मिलाकर 216 लोगों ने शिविर से लाभ प्राप्त किया।

तेयुप सदस्यों ने उपस्थित जनसमूह को एटीडीसी एवं डे केयर सेंटर, श्रीरामपुरम की विभिन्न सेवाओं, डॉक्टरों की उपलब्धता तथा सुविधाओं की जानकारी प्रदान की।

जैन समाज के सदस्यों ने इस मानव सेवा उपक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए परिषद परिवार के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

इस अवसर पर एमजेओएसएस के अध्यक्ष ललित मांडोत एवं उनकी टीम, अभातेयुप परामर्शक दिनेश पोखरना ने शिविर में पधारकर युवाओं का उत्साहवर्धन किया।

शिविर के सफल संचालन में तेयुप अध्यक्ष जितेश दक, राजेश देरासरिया, मंत्री अनिमेष चौधरी, भावेश बोथरा तथा एटीडीसी स्टाफ का विशेष योगदान रहा।

संबोधि

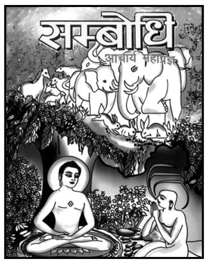

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मेघ की आलोकित आत्मा अंत में कृतज्ञ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है, जिसका एक-एक शब्द श्रद्धा से स्पन्दित है और भावों की विशुद्धि लिए हुए है।

कृतज्ञता के स्वर

मेघः प्राह

३९. सर्वज्ञोऽसि सर्वदर्शी, स्थितात्मा धृतिमानसि।
अनायुरभयो ग्रन्थादतीतोऽसि भवान्तकृत्॥

मेघ ने कहा-आर्य ! आप सर्वज्ञ हैं, सर्वदर्शी हैं, स्थितात्मा हैं, धैर्यवान् हैं, अमर हैं, अभय हैं, राग-द्वेष की ग्रंथियों से रहित हैं और संसार का अंत करने वाले हैं।

४०. पश्यतामुत्तमं चक्षुर्सानिनां ज्ञानमुत्तमम्।
तिष्ठतां स्थिरभावोऽसि, गच्छतां गतिरुत्तमा।

आप देखने वालों के लिए उत्तम चक्षु हैं, ज्ञानियों के लिए उत्तम ज्ञान हैं, ठहरने वालों के लिए उत्तम स्थान हैं और चलने वालों के लिए उत्तम गति हैं।

४१. शरणं चास्यऽबन्धूनां, प्रतिष्ठा चलचेतसाम्।
पोतश्चासि तितीर्षूणां, श्वासः प्राणभृतां महान्॥

आप अशरणों के शरण हैं, अस्थिर चित्त वाले मनुष्यों के लिए प्रतिष्ठान हैं, संसार से पार होने वालों के लिए नौका हैं और प्राणधारियों के लिए आप श्वास हैं।

४२. तीर्थनाथ ! त्वया तीर्थमिदमस्ति प्रवर्तितम्।
स्वयंसम्बुद्ध ! सम्बुद्ध्या, बोधितं सकलं जगत्॥

हे तीर्थनाथ ! आपने इस चतुर्विध संघ का प्रवर्तन किया है। हे स्वयंसंबुद्ध ! आपने अपने ज्ञान से समस्त संसार को जागृत किया है।

४३. अहिंसाराधनां कृत्वा, जातोऽसि पुरुषोत्तमः।
जातः पुरुषसिंहोऽसि, भयमुत्सार्य सर्वथा॥

भगवन् ! आप अहिंसा की आराधना कर पुरुषोत्तम बने हैं, भय को सर्वथा छोड़ पुरुषों में सिंह के समान पराक्रमी बने हैं।

४४. पुरुषेषु पुण्डरीकः, निर्लेपो जातवानसि।
पुरुषेषु गन्धहस्ती, जातोऽसि गुणसम्पदा॥

निर्लेप होने के कारण आप पुरुषों में पुण्डरीक कमल के समान हैं। गुण-संपदा से समृद्ध होने के कारण आप पुरुषों में गंधहस्ती के समान हैं। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री सिणागारांजी (सुजानगढ़) दीक्षा क्रमांक 190

साध्वीश्री ने 4 वर्ष के संयम पर्याय में कई तप किये। जो विवरण प्राप्त है- 1901 में आछ के आधार से मासखमण, 1902 में मासखमण, 1903 में 40 दिन का तप किया। अन्त में 10 प्रहर का अनशन कर समाधि मरण को प्राप्त किया।

– साभार : शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

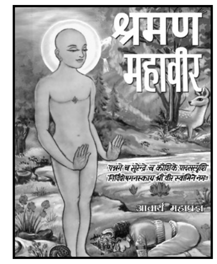

भाषा सम्पर्क का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। मन को मन से पकड़ने वाले लोग बहुत कम होते हैं। संकेत की शक्ति सीमित है। मनुष्य बोलकर अपनी बात दूसरों तक पहुंचाता है। भाषा का प्रयोजन ही है अपने भीतर के जगत् को दूसरे के भीतरी जगत् से मिला देना। भाषा एक उपयोगिता है। अपने शैशव में उपयोगिता केवल उपयोगिता होती है। यौवन की दहलीज पर पैर रखते ही वह अलंकार बन जाती है। प्राण-शक्ति प्रखर होती है, सौन्दर्य सहज होता है, तब अलंकार की अपेक्षा नहीं होती। प्राण की ज्योति मन्द होने लगती है तब अलंकार की आकांक्षा प्रबल होना चाहती है। युग ऐसा आया कि भाषा भी अलंकार बन गई। जो सम्पर्क-सूत्र थी, वह बड़प्पन का मानदंड बन गई। पंडित लोग उस संस्कृत में बोलते और लिखते थे जो जनता की भाषा नहीं थी, जनता के लिए अगम्य थी। परिणाम यह हुआ कि दो वर्ग बन गए-एक पंडित की भाषा बोलने वालों का और दूसरा जनता की भाषा बोलने वालों का। पंडितों की भाषा असाधारण हो गई और जनता की भाषा साधारण मानी जाने लगी।

महावीर का लक्ष्य था-सबको जगाना। सबको जगाने के लिए जरूरी था सबके साथ संपर्क साधना। पंडिताई की भाषा में ऐसा होना संभव नहीं था। इसलिए भगवान् ने जन-भाषा को सम्पर्क का माध्यम बनाया।

प्राकृत का अर्थ है-प्रकृति की भाषा, जनता की भाषा। भगवान् जनता की भाषा में बोले और-जनता के लिए बोले इसलिए वे जनता के हो गए। उनका संदेश बालकों, स्त्रियों, मंदमतियों और मूर्खों तक पहुंचा। उन सबको उससे आलोक मिला।

महावीर इश्वरीय संदेश लेकर नहीं आए थे। उनका संदेश अपनी साधना से प्राप्त अनुभवों का संदेश था। इसलिए उसे जनता की भाषा में रखने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं थी। उस समय कुछ पंडित जनता को ईश्वरीय संदेश देने की घोषणा कर रहे थे। ईश्वरीय सन्देश भला जनता की भाषा में कैसे हो सकता है? वह उस भाषा में होना चाहिए जिसे जनता न समझ सके। यदि उसे जनता समझ ले तो वह एक वर्ग की धरोहर कैसे बन जाए? महावीर ने उस एकाधिकार को भंग कर दिया। दर्शन के महान् सत्य जनता की भाषा में प्रस्तुत हुए। धर्म सर्व-सुलभ हो गया। स्त्री और शूद्र नहीं पढ़ सकते- इस आदेश द्वारा स्त्री और शूद्रों को धर्म-ग्रंथ पढ़ने से वंचित किया जा रहा था। महावीर के उदार दृष्टिकोण से उन्हें धर्मग्रन्थ पढ़ने का पुनः अधिकार मिल गया।

'भाषा का आग्रह हमें कठिनाई से नहीं उबार सकता'- महावीर का यह स्वर आज भी भाषावाद के लिए महान् चुनौती है।

७. करुणा और शाकाहार

श्रमण आर्द्रकुमार एकदण्डी परिव्राजक के प्रश्नों का उत्तर दे महावीर की दिशा में आगे बढ़ा। इतने में हस्ती-तापस ने उसे रोककर कहा- 'आर्द्रकुमार ! तुमने इन परिव्राजकों को निरुत्तर कर बहुत अच्छा काम किया। ये लोग कंद, मूल और फल का भोजन करते हैं। जीवन-निर्वाह के लिए असंख्य जीवों की हत्या करते हैं। हम ऐसा नहीं करते।'

'फिर आप जीवन-निर्वाह कैसे करते हैं?'

'हम बाण से एक हाथी को मार लेते हैं। उससे लम्बे समय तक जीवन-निर्वाह हो जाता है।'

'कंद-मूल के भोजन से इसे अच्छा मानने का आधार क्या है?'

'इसकी अच्छाई का आधार अल्प-बहुत्व की मीमांसा है। एकदण्डी परिव्राजक असंख्य जीवों को मारकर एक दिन भोजन करते हैं, जबकि हम एक जीव को मारकर बहुत दिनों तक भोजन कर लेते हैं। वे बहुत हिंसा करते हैं, हम कम हिंसा करते हैं। 'मांसाहार के समर्थन में दिए जाने वाले इस तर्क की आयु ढाई हजार वर्ष पुरानी तो अवश्य ही है। इस तर्क की शरण गृहस्थ ही नहीं, मांसाहारी संन्यासी भी लेते थे। महावीर ने इस तर्क को अस्वीकार कर मांसाहार का प्रबल विरोध किया।'

उस विरोध के पीछे कोई वाद नहीं, किन्तु करुणा का अजस्र प्रवाह था। उनके अन्तःकरण में प्राणी-मात्र के प्रति करुणा प्रवाहित हो रही थी। पशु-पक्षी और वनस्पति आदि सूक्ष्म जीवों के साथ उनका उतना ही प्रेम था, जितना की मनुष्य के साथ। उनके प्रेम में किसी भी प्राणी के वध का समर्थन करने का कोई अवकाश नहीं था। उन्हें प्रिय थीं अहिंसा और केवल अहिंसा, किन्तु मानव का जगत् उनकी भावना को कैसे स्वीकार कर लेता? आखिर यह जीवन का प्रश्न था। जीना है तो खाना है। खाए बिना जीवन चल नहीं सकता। 'अन्नं वै प्राणाः' अन्न ही प्राण है, यह धारणा समाजमान्य हो चुकी थी। भगवान् ने भोजन की समस्या पर दो दृष्टिकोणों से विचार किया। एक दृष्टिकोण अनिवार्यता का था और दूसरा संकल्प का। भगवान् ने असम्भव तत्त्व का प्रतिपादन नहीं किया। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

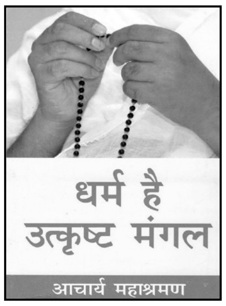

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार : गुरुदेव श्री तुलसी

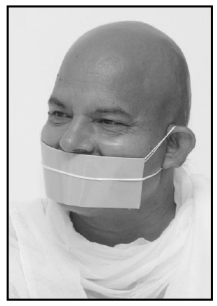

भारतीय संस्कार निर्माण समिति

आचार्यवर ने हरिजन वर्ग के उद्धार के लिए भारतीय संस्कार निर्माण समिति की परियोजना बनाई। इस समिति के माध्यम से हरिजनों को आहार-शुद्धि, व्यसन-मुक्ति, हीन भावना का परित्याग आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है।

नया मोड़ और जैन संस्कार विधि

तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर आचार्यश्री ने समाज के सम्मुख नया मोड़ का अभिनव अभियान प्रस्तुत किया। इस अभियान का उद्देश्य था-समाज में प्रचलित कुप्रथाओं का प्रोन्मूलन। उस समय समाज व्यापी अनेक कुप्रथाएं थीं। उन कुप्रथाओं में पर्दाप्रथा, मृत्युभोज, मृत्यु के अवसर पर प्रथारूप में रोना, विधवाओं के काले वस्त्र और उनका तिरस्कार, विवाह आदि प्रसंगों पर होने वाले वृहद् भोज, दहेज का ठहराव और प्रदर्शन आदि मुख्य थे। आचार्यवर द्वारा प्रवर्तित 'नया मोड़' के उपक्रम ने रूढ़ियों के उन्मूलन में सन्तोषजनक सफलता प्राप्त की। एक दशक में ही इस परियोजना के अच्छे परिणाम सामने आने लगे।

इसी कार्यक्रम का अन्तिम चरण है जैन संस्कार विधि, जो कि जन्म, मृत्यु और विवाह आदि के प्रसंगों पर उभरने वाली समस्याओं का समुचित समाधान है। समाज के अनेक परिवारों ने इस विधि को ससम्मान अपनाया है।

आचार्यवर ने अपने जीवनकाल में हर दृष्टि से समाज को परिष्कृत और विकसित करने की अविराम कोशिश की है। आचार्यश्री के इन क्रान्तिकारी अभियानों के सामने विरोधों और अवरोधों के अनेक झंझावात भी आए हैं, पर इस महामानव ने उन सबका डटकर मुकाबला किया है। आचार्यश्री तुलसी के समाज सुधार की देन इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अक्षरों में उल्लेखनीय है।

वैमनस्य का विनाश

25 मार्च 1985 (लगभग) को परमाराध्य आचार्य प्रवर का चिताम्बा ग्राम में प्रवास हो रहा था। सायंकालीन अर्हत्-वंदना सम्पन्न हुई। आचार्यवर स्थानीय सभा-भवन के प्रांगण में विराजमान थे। गांव के सभी वर्गों के लोग आचार्यचरण के पुनीत उपपात में उपस्थित थे। आचार्यश्री ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए पूछा-सभा-भवन या निर्माणाधीन स्कूल को लेकर कोई मनमुटाव तो नहीं है?

कई लोग बोले-गुरुदेव ! कजोड़ीमलजी सामरा को लेकर कुछ शिकायत है।

आचार्यश्री– कहो, क्या शिकायत है।

ग्रामवासी– ये गालियां बोलते हैं, भय दिखाते हैं और हमारी क्षमता से अधिक अर्थदान के लिए दबाव डालते हैं। इस गांव में इतनी बड़ी स्कूल का निर्माण सम्भव नहीं है।

कजोड़ीमलजी– गुरुदेव ! मुझे इन लोगों से चन्दा लेने का त्याग करवा दो। मैं बाहर से चन्दा इकट्ठा कर स्कूल बना दूंगा।

आचार्यश्री– (ग्रामवासियों की तरफ दृष्टिपात करते हुए) आप लोगों ने अब तक कितना चन्दा दिया?

ग्रामवासी– स्कूल के लिए तो एक नया पैसा भी नहीं दिया।

आचार्यश्री– फिर विरोध का क्या प्रयोजन? कोई कहीं से लाता है, बनाता है, आपको आपत्ति क्यों? आपको तो गर्वानुभूति करनी चाहिए कि हमारे गांव में एक ऐसा कर्मठ व्यक्ति है, जो गांव की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ऐसे कर्मशील व्यक्ति का विरोध कर वज्रमूर्खता क्यों कर रहे हो?

इधर बहुत सारे लोग श्रीमान् कजोड़ीमलजी की निष्काम सेवा की सराहना कर रहे थे। आचार्यवर ने कजोड़ीमलजी से कहा- तुम इन्हें गालियां क्यों देते हो?

कजोड़ीमलजी– गुरुदेव ! पहले इनसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं। इनके पैरों में अपनी पगड़ी रखता हूं। यह सारा प्रयत्न जब व्यर्थ सिद्ध हो जाता है तो मुझे गुस्सा आ जाता है। तब मैं गालियां बोल देता हूं।

आचार्यश्री– (ग्रामवासियों से) स्कूल में किनके बच्चे पढ़ेंगे?

ग्रामवासी– हमारे।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

नवम्बर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

14 नवंबर	15 नवंबर
भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक	भगवान पद्मप्रभु निर्वाण कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री आसकरणजी (सुजानगढ़) दीक्षा क्रमांक 424

मुनिश्री ने विविध तपस्या कर तपोधनी मुनियों की पंक्ति में अपना नाम अंकित कर दिया। तप की कुल तालिका इस प्रकार है– उपवास/701, 2/24, 3/5, 4/6, 5/3, 6/2, 7/2, 9/1, 10/1, 11/1, 14/1, मासखमण/1। – साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप्प** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

ज्ञानशाला विकास में प्रशिक्षिकाओं की होती है अहम भूमिका

सूरत।

तेरापंथ भवन में आयोजित ज्ञानशाला प्रशिक्षण वर्कशाप में संभागी सैंकड़ों प्रशिक्षिकाओं को सम्बोध प्रदान करते हुए प्रो. साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा तेरापंथ संघ की नई पौध ज्ञानशाला के विकास में प्रशिक्षिकाओं की अहम भूमिका है। उनका श्रम समय और निःस्वार्थ भाव ज्ञानार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

यहां का व्यवस्था पक्ष भी सशक्त है। साध्वीश्री ने कहा सूरत की ज्ञानशाला का संचालन प्रेरक है। यहां की ज्ञानशाला ने विशिष्ट ज्ञानशाला का खिताब जीता, इसमें प्रशिक्षिकाओं का श्रम मुखर हो रहा है। नियमित व्यवस्थित चलने वाली ज्ञानशाला में तेरापंथ सभा ट्रस्ट आदि की उदारता, जागरूकता सराहनीय है।

प्रशिक्षण स्वरूप साध्वीश्री ने प्रशिक्षिकाओं को अनेक सूत्र प्रदान करते हुए कहा कि प्रशिक्षिकाएं भी अपने अध्ययन को गहराने का प्रयास करें। उनका ज्ञान जितना बहुमुखी होगा, ज्ञानार्थियों के लिए श्रेयस्कर है। बच्चों को पाठ्यक्रम से अतिरिक्त अध्ययन भी करवाया जाए।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर एवं सहमंत्री महेन्द्र गांधी मेहता ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी एवं प्रशिक्षिकाओं के प्रति प्रमोद भाव प्रस्तुत किए।

सूरत ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया ने कहा साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने इस बार ज्ञानशाला को नए-नए कार्यक्रम प्रदान किए। उनका मोटिवेशन पॉवर बेजोड़ है। साध्वीवृन्द ने सामूहिक संगान किया।

प्रशिक्षिका भावना सोलंकी ने ज्ञान संवर्धक एक्टिविटी करवाकर वातावरण को सरस बनाया। इस अवसर पर समस्त प्रशिक्षिकाओं का तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान किया गया।

ज्ञानशाला संयोजक जतिन तलेसरा ने आभार जताया।

बारह व्रत कार्यशाला सानंद सम्पन्न

गाँधीनगर, दिल्ली।

तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर, दिल्ली में बड़े उत्साह के साथ किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ।

उपासक मनीष छलाणी ने इस कार्यशाला में धर्म, संयम और आत्मिक शुद्धि से जुड़े बारह व्रतों की विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि व्रत दीक्षा का अर्थ है — असंयम से संयम की ओर प्रस्थान। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि दैनिक जीवन में जैन सिद्धांतों का पालन करने में बारह व्रत अत्यंत सहायक हैं।

उपासक मनीष छलाणी ने उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज को बारहवर्ती श्रावक बनने हेतु प्रेरित किया। तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली ने 108 बारहवर्ती श्रावक बनाने का संकल्प व्यक्त किया।

इस अवसर पर दिल्ली सभा मंत्री व परामर्शक कमल गांधी, गाँधीनगर सभा अध्यक्ष निर्मल छलाणी, मंत्री बजरंग कुंडलिया व उनकी टीम, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल, तेयुप संस्थापक अध्यक्ष अशोक सिंघी, तेयुप अध्यक्ष क्रांति बरड़िया, पदाधिकारीगण, युवा, किशोर साथी तथा कन्या मंडल की उपस्थिति रही।

कार्यशाला का कुशल मंच संचालन मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया तथा आभार ज्ञापन कार्यशाला संयोजक अरिहंत बैद ने किया।

समाज में उल्लेखनीय योगदान के लिए मिला जैन समाज रत्न पुरस्कार

मुंबई।

भारत जैन महामंडल द्वारा आयोजित समारोह में तेरापंथ समाज के सुरेन्द्र पटावरी, जो मोमासर (राजस्थान) से हैं और बेल्जियम के प्रख्यात उद्योगपति व समाजसेवी हैं, को 'जैन समाज रत्न अलंकरण' से सम्मानित किया गया।

यह सर्वोच्च नागरिक सम्मान उन विशिष्ट व्यक्तियों को दिया जाता है जो अहिंसा, नीतिपूर्ण जीवन, पर्यावरण संरक्षण, परोपकार और सामाजिक उत्थान में उल्लेखनीय योगदान देते हैं। श्री पटावरी को यह सम्मान वैश्विक स्तर पर सतत विकास, सर्कुलर इकोनॉमी और पर्यावरण संरक्षण को आगे बढ़ाने तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन और जिम्मेदार औद्योगिक प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर महामहिम गुलाबचंद कटारिया, राज्यपाल, पंजाब एवं प्रशासक, चंडीगढ़, महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर और राज्य के कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा ने संयुक्त रूप से सुरेन्द्र पटावरी को यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया।

समारोह का सफल आयोजन भारत जैन महामंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सी. सी. डांगी के नेतृत्व में किया गया। सम्मान ग्रहण करते हुए पटावरी जी ने यह अलंकरण आचार्य श्री महाश्रमण जी को समर्पित किया।

ऋतु परिवर्तन का प्रतीक है शरद पूर्णिमा का चांद

छत्तरपुर, नई दिल्ली।

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य एवं तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वाधान में Full Moon Meditation का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रकृति की अनुकूलता न होने पर भी शताधिक भाई बहनों में उल्लासमय माहौल में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस अवसर पर साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा, शरदपूर्णिमा का समय अपने आप में अद्भुत है क्योंकि यही वह समय और दिन है जब अपनी संपूर्ण कलाओं से जगमगाता चंद्रमा विशेष प्रकार की रश्मियां संप्रेषित करता हैं जिससे शांति और आनंद तो मिलता ही है, उन रश्मियों के साथ जुड़ने वाला अपने आवेश और आवेग को भी नियंत्रित कर सकता है।

शरद पूर्णिमा का आगमन ऋतु परिवर्तन को दर्शाता है। गर्मी की समाप्ति एवं शरद ऋतु का आगमन सभी के भीतर आह्लाद का वातावरण निर्मित करता है।

प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री उम्मेद दुगड़ ने कहा आज का दिन जहां मंत्र एवं तंत्र विद्या की सिद्धि में सहायक बनता है, वहीं आत्मशोधन के मार्ग को भी प्रशस्त करता है। इस दिन खीर खाने का प्रचलन है ताकि कई तरह की शारीरिक व्याधियों को शांत किया जा सके। इतना ही नहीं यह पूनम मन भावों की शुद्धि कर अध्यात्म में प्रवेश करवा सकती हैं।

लगभग 45 मिनट का ध्यान भी करवाया गया जो प्रभावी रहा। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया एवं आभार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर विशेष रूप से रमेश गोयल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महावीर, तुलसी बाल विद्यालय के प्रिंसिपल आदि उपस्थित थे। संदीप डुंगरवाल ने संपूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सराहनीय श्रम किया।

खुशहाल दाम्पत्य जीवन के रहस्य पर कार्यशाला का आयोजन

यशवंतपुर।

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में यशवंतपुर सभा भवन में 'खुशहाल दांपत्य जीवन के रहस्य' विषयक पारिवारिक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया।

सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि तेरापंथ भवन में सभा के तत्वावधान में इस प्रकार की कार्यशाला का यह प्रथम आयोजन है। सुनील-वनीता बोल्या ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की, जबकि छह युगल जोड़ों ने सामूहिक मंगलाचरण किया।

साध्वी सोमयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारी दुनिया रिश्तों की दुनिया है, जहाँ हर व्यक्ति एक डोर से बंधा हुआ है। एक महत्वपूर्ण रिश्ता दांपत्य का है, जो परिवार में सुख, शांति और वैभव फैलाने का माध्यम बनता है। यह रिश्ता विवाह से जुड़ता है – वि का अर्थ विश्वास, वा का अर्थ वादा, और हा का अर्थ है हाथ मिलाकर साथ निभाना। साध्वीश्री ने समझाया कि हाथ की प्रत्येक उंगली रिश्तों का रक्षा कवच है। उन्होंने बताया कि कहना सीखे, रहना सीखे, सहना सीखे — यही दांपत्य जीवन की सफलता का मूल मंत्र है। इससे संबंधित एक जप भी उन्होंने सिखाया। साध्वी सरलयशा जी ने टॉक शो के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए और सबमें नई ऊर्जा और खुशहाली का संचार किया। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए दांपत्य जीवन को खुशहाल बनाए रखने के उपयोगी सुझाव दिए।

प्रशिक्षक संजय धारीवाल ने विशेष प्रशिक्षण सत्र के दौरान कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें जैन धर्म मिला है और आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुशासना तथा साधु-साध्वियों के सान्निध्य में सीखने का अवसर प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि खुशहाल दांपत्य जीवन का रहस्य भगवान महावीर के सिद्धांतों — अनेकांतवाद, अहिंसा और अपरिग्रह — को जीवन में अपनाने में निहित है। उन्होंने कहा कि अपने मन, वचनों और व्यवहार पर नियंत्रण रखें, अपनी बॉडी लैंग्वेज सुधारें और स्वयं को समझने का प्रयास करें। जैसे हम मोबाइल के फीचर्स समझने के लिए समय देते हैं, वैसे ही स्वयं को समझने के लिए भी एक दिन का समय दें। अपनी खूबियों को जानें, कमियों पर विचार करें और उन्हें सुधारने का प्रयास करें। जीवन को मोबाइल से अधिक मूल्यवान समझें और उसका सदुपयोग करें। साध्वी सोमयशा जी ने विशेष रूप से कहा कि सप्ताह में एक दिन भोजन और भजन परिवार के साथ करना चाहिए तथा प्रतिदिन 'ओम ऐं नमो लोए सव्वसाहूणं' की एक माला का जप अवश्य करना चाहिए। बहादुर सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में सहभागी जोड़ों के लिए जिज्ञासा-समाधान का एक सत्र भी आयोजित किया गया। विभिन्न आयु वर्ग के लगभग 50 युगल इस कार्यशाला में शामिल हुए।

इस आयोजन में महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पीतलिया, सभा सहमंत्री सुनील बाबेल और युवक परिषद अध्यक्ष धर्मेश डूंगरवाल का विशेष योगदान रहा।

कार्यशाला के संयोजक रहे — सभा की ओर से निर्मल बाफना, परिषद की ओर से दीपक बाबेल और महिला मंडल की ओर से लाडली मुथा। कार्यक्रम के अंत में महिला मंडल मंत्री टीना पीतलिया ने आभार ज्ञापन किया।

बोलती किताब

अवचेतन मन से सम्पर्क

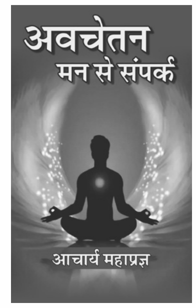

धर्म के बिना काम का परिष्कार नहीं होता और काम के परिष्कार के बिना अर्थ का परिष्कार नहीं हो सकता। केवल अर्थ-शुद्धि घटित करने का अर्थ है कि हम परिणाम को मिटाना चाहते हैं, कारण को मिटाना नहीं चाहते। यह एक भयंकर दार्शनिक भूल है। हम प्रवृत्ति को मिटाना नहीं चाहते, परिणाम को मिटाना चाहते हैं। हम परिणाम का शोधन करना चाहते हैं, पर प्रवृत्ति के शोधन की बात नहीं सोचते। प्रवृत्ति है तो परिणाम होगा ही। केवल परिणाम का शोधन हो नहीं सकता।

समस्या से मुक्ति पाने का तात्पर्य है—काम और अर्थ से मुक्ति पाना। एक ओर है काम और अर्थ। दूसरी ओर है काममुक्ति और अर्थमुक्ति। इन दोनों के बीच में है परिष्कार। दो ध्रुवों के बीच हम चलते हैं। यदि परिष्कार होता रहे तो एक प्रकार के नए जीवन का उदय होगा। यदि परिष्कार की बात छूट जाती है तो जीवन का प्रकार बदल जाता है, फिर व्यक्ति में आग्रह पनपता है और वह यही कहता है कि मुझे तो यही अपरिष्कृत जीवन ही जीना है। अपरिष्कृत अर्थ का भी आग्रह हो जाता है। व्यक्ति कहता है—मुझे तो इतना संचय करना ही है, फिर चाहे जैसे—तैसे करूं।

विकास का सबसे बड़ा सूत्र है संभावना की स्वीकृति। विकास की सबसे बड़ी बाधा है संभावना को नकारना। संभावनाओं को नकारना अपने आपको पहले से ही रस्सों से बांध देना है, फिर आगे गति कैसे हो सकती है? संभावना की अस्वीकृति सबसे बड़ा विघ्न है साधना का। यदि साधक मान ले कि मन की चंचलता को मिटाना संभव नहीं है, यह करना संभव नहीं है, वह करना संभव नहीं है तो वह सारी संभावनाओं के द्वार को ही बंद नहीं करता, उस पर मजबूत ताला लगा कर चाबियों को भी खो देता है।

संभव है कि आज भी व्यक्ति में इतना आग्रह हो गया है कि वह सोचता है—कुछ भी हो—समाज टूटे, परिवार टूटे, जाति टूटे, सब धरातल में चले जाएं, पर मेरे पास जीने की एक कला है, और उसका सूत्र है—'पैसा मेरा और सब अनेरा।' जब अपरिष्कार का इतना आग्रह बन जाता है तब सारी उलझनें पैदा होती हैं। ध्यान और श्वास प्रेक्षा के द्वारा हम ऐसी चेतना का निर्माण करें, जिससे परिष्कार घटित हो जाए। काम और अर्थ का परिष्कार होता रहे। हम पहले अर्थ के परिष्कार के लिए प्रयत्न न करें। वह काम के परिष्कार से स्वयं होने वाला परिणाम है। जब काम सक्रिय होगा तो उसका परिणाम निष्क्रिय कैसे हो पाएगा? हम कामना के परिष्कार के लिए सघन प्रयत्न करें। उसके घटित होने पर अर्थ-परिष्कार दुरूह नहीं होगा, स्वयं आएगा।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

संयम का सुख है...

जो साधुत्व में रम जाता है वह महान होता है और उसके बाद फिर आत्मिक सुखों के सामने देवलोक के सुख भी तुच्छ हैं। पैसा, पद और प्रतिष्ठा बहुत छोटी चीजें हैं। कोई यह पूछे कि दीक्षा किसकी हो सकती है तो दीक्षा युवा, बाल या वृद्ध किसी भी अवस्था में हो सकती है, किन्तु योग्यता सबसे पहले है। यद्यपि दीक्षा की न्यूनतम आयु सवा आठ वर्ष होती है। हम क्वांटिटी चाहते हैं, परन्तु वह क्वालिटी के साथ होनी चाहिए। सिर्फ संख्या बढ़ाना हमारा लक्ष्य नहीं है। कई साधु-साध्वियां वैरागी तैयार करते हैं, यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। गुरुदेव ने आगे फरमाया कि आज एक भाई की दीक्षा हो रही है। इससे पूर्व में सत्रह दीक्षाएं हुई हैं, इस चातुर्मास की यह अठारहवीं दीक्षा है। नवदीक्षित साधु-साध्वियों में संयम के प्रति जागरूकता रहे। हर कार्य में संयम का प्रयास हो। संयम में मजबूत निष्ठा और चित्त में शांति रहे। जब जहां जैसा भी अवसर हो सेवा के लिए तैयार रहें। बड़ा वह होता है जिसमें नम्रता, क्षमाशीलता, भक्ति और आदर-भाव होता है। हमें स्वभाव को संस्कारों से ऊंचा रखना चाहिए। सभी में आत्म निष्ठा, संघ निष्ठा, आज्ञा निष्ठा, आचार निष्ठा और मर्यादा निष्ठा हो। पूज्य गुरुदेव ने आगामी दीक्षा समारोह की घोषणा करते हुए कहा कि सन् 2026 का चातुर्मास लाडनूं में संभावित है। उस दौरान योगक्षेम वर्ष में तीन दीक्षा समारोहों में 8 फरवरी 2026 को मुमुक्षु खुशी को समणी दीक्षा, 6 मार्च 2026 को मुमुक्षु रचना को साध्वी दीक्षा तथा 23 अप्रैल 2026 को मुमुक्षु चंदन को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम के दौरान बीदासर (राजस्थान) का श्रावक समाज बड़ी संख्या में उपस्थित था। सभी चातुर्मास की प्राप्ति के लिए बड़ी आतुरता से प्रतीक्षारत थे। पूज्य गुरुदेव ने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलता के आधार पर वि.सं. 2090 अर्थात ईस्वी सन् 2033 का चातुर्मास एवं सन् 2034 का मर्यादा महोत्सव बीदासर में करने की घोषणा की।

प्रतिकूल और अनुकूल...

मतभेद या विचारभेद भले हों, पर मनभेद नहीं होना चाहिए। जीवन में आपसी सामंजस्य और सौहार्द का भाव बना रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को शब्दों की कठोरता को भी सहन करने का अभ्यास करना चाहिए। मानसिक सहिष्णुता का विकास उतना ही आवश्यक है जितना शारीरिक सहनशीलता का। शरीर को भी इतना मजबूत बनाना चाहिए कि वह कठिनाइयों को सहजता से सह सके। जीवन में सहनशीलता ही स्थिरता और समता की आधारशिला है। मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य गुरुदेव ने सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों को पुनः अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत करने का अवसर दिया और उन्हें समाधान प्रदान किया। यह जिज्ञासा-समाधान सत्र शिविरार्थियों के साथ-साथ उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए भी अत्यंत लाभप्रद रहा। इस अवसर पर मुनि मदनकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। मदनपुरा और बीदासर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अभिनंदन समारोह उत्साह और उमंग के साथ संपन्न

गुड़ियातम।

मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी हनुमानमल दुगड़ का मंगल भावना समारोह उत्साह और उमंग के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजनों, महिला मंडल, युवक परिषद एवं विभिन्न संघ–संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर दीक्षार्थी को हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित कीं। इसी क्रम में तपस्विनी बहन अनीता आच्छा की 31 उपवास की तपस्या के अभिनंदन का कार्यक्रम भी हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। उनके कठिन तप और साधना की सराहना करते हुए समाजजनों ने उन्हें सम्मानित किया तथा उनके तपोबल को समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बताया। महिला मंडल ने भावगर्भित गीतिका प्रस्तुत की, वहीं युवक परिषद की ओर से अभिनंदन पत्र एवं साहित्य भेंट किया गया। मुनि रश्मिकुमार जी एवं मुनि प्रियांशुकुमार जी ने अपने वक्तव्यों में तप, त्याग और संयममय जीवन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मिक शुद्धि और आंतरिक आनंद का मार्ग केवल साधना और संयम से ही संभव है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 नवम्बर - 09 नवम्बर, 2025

भगवान महावीर से सीखें सहिष्णुता : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
21 अक्टूबर, 2025

अखंड परिव्राजक, तीर्थंकर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन में कैसा भी परीषह हो जाए, उस कठिनाई, उपद्रव, परीषह को समता भाव से सहन करना चाहिए, यह साधु का धर्म है।'

भगवान महावीर ने कितना कुछ सहन किया होगा? उनका साधना काल साधिक बारह वर्षों का रहा। उस समय में प्रभु के सामने अनेक स्थितियां आई थीं। उनके देवकृत, तिर्यंचकृत और मनुष्यकृत कठिनाइयां आईं। सामने परीषह, उपद्रव आए। इन उपसर्गों, कष्टों, परीषहों को सहन करना साधना है। भगवान महावीर ने लगभग तीस वर्षों तक गार्हस्थ्य जीवन जिया। लगभग साढ़े बयालीस वर्ष का उनका श्रमण पर्याय रहा और उसी के अंतर्गत उन्हें तीर्थंकरत्व भी प्राप्त हुआ। तीर्थंकर या केवल ज्ञान होने के बाद के तीस वर्षों का समय जनोद्धार और जीवोद्धार के कार्य का समय रहा, प्रवचन देने का समय रहा, कितनों को बोध प्रदान करने का समय रहा। भगवती सूत्र और आगम वांग्मय में कितने प्रश्नों का समाधान प्रभु ने दिया है और उसमें उन्होंने कितना समय लगाया है। प्रश्नकर्ता के रूप में गौतम स्वामी जैसे शिष्य उनके पास थे।

भगवान महावीर के ग्यारह गणधर थे और उनमें इन्द्रभूति गौतम का नाम भगवती और अन्य आगम वांग्मय में जगह-जगह पर आता है। साधना काल में प्रभु प्रायः मौन रहे होंगे, पर तीर्थंकरत्व के बाद का समय वाणी के उपयोग का समय रहा। पहले तपस्या का समय रहा होगा, बाद में उन्होंने आहार भी किया होगा।

भगवान महावीर की देशना और प्रवचन कितने कल्याणकारी हो सकते हैं। आज कार्तिक कृष्णा अमावस्या है और यह भगवान महावीर से जुड़ी हुई तिथि है। आज की रात्रि में प्रभु महावीर ने मोक्ष प्राप्त किया था। कार्तिक कृष्णा अमावस्या भगवान महावीर की निर्वाण तिथि है तो गौतम स्वामी की केवल ज्ञान प्राप्ति की तिथि है। दोनों बातें साथ में जुड़ी हुई हैं। यह अमावस्या भगवान महावीर से जुड़कर मानो धन्य हो गई। महापुरुषों के रहने से लोगों को राह मिल सकती है, चाह मिल सकती है, और वाणी सुनने से भीतर में उत्साह का संचार हो सकता है।

तीर्थंकर महावीर इस भरत क्षेत्र के, इस अवसर्पिणी के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर हुए। उनका तीर्थ अभी भी, आज भी चल रहा है। हमें भी भगवान महावीर के तीर्थ में सम्मिलित होने का अवसर मिला है। हम इस जिनशासन में दीक्षित हैं और मानो एक विमान में बैठे हैं, हमें पार पहुंचना है। हम भगवान महावीर की बराबरी तो नहीं कर सकते, परंतु जितना संभव हो सके समता भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। भगवान महावीर का आयुष्य चाहे लंबा नहीं था, परंतु उनकी तेजस्विता, केवल ज्ञान संपन्नता और तीर्थंकरत्व बड़ी चीजें हैं। अतः जितना संभव हो सके सहन करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य प्रवर ने भगवान महावीर से संदर्भित जप का प्रयोग करवाया।

पूज्य प्रवर के मंगल उद्बोधन के पश्चात् साध्वीवर्याजी ने अपने संबोधन में कहा कि अभी प्रकाश पर्व चल रहा है। प्रकाश बाहरी अर्थात् भौतिक और भीतरी दोनों प्रकार का हो सकता है। भीतरी प्रकाश चैतन्य का प्रकाश है, केवल ज्ञान का प्रकाश है।

चैतन्य का प्रकाश प्राप्त करने के लिए हमें आत्मीय गुणों को विकसित करना होगा और आत्मिक गुणों के विकास के लिए हमें आध्यात्मिक वातावरण में रहना होगा। अध्यात्म की प्रेरणा देने वाला चतुर्विंशतिस्तव का अंतिम पद्य है, जिसके माध्यम से हम आत्मिक विकास कर सकते हैं।

गतिशील ही प्राप्त कर सकता है गंतव्य : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
22 अक्टूबर, 2025

ज्ञानयोगी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'आयारो' आगम में कहा गया है, 'धर्म को जानकर मुनि श्रमण धर्म का पालन करते हैं।' धर्म को जान लेना भी एक उपलब्धि है। जीवन में धर्म कितना उतरता है, यह दूसरी बात है। किसी चीज को हम अच्छी तरह जान लेते हैं और उस पर श्रद्धा हो जाती है, यदि वह धर्म का क्षेत्र है तो कभी न कभी हम धर्म का पालन भी करेंगे, यदि सम्यक् श्रद्धा और सम्यक् ज्ञान हो गया है।

धर्म का बोध तीर्थंकरों से प्राप्त हो सकता है। उनसे बड़ा कोई ज्ञानी दुनिया में संभव नहीं लग रहा है। अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता और अनुत्तर प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं। अतः तीर्थंकर जो धर्म निर्दिष्ट करते हैं, उसे जानकर उसका अनुसरण करने का प्रयास करें। एक साथ यदि अनुसरण न हो पाए तो थोड़ा-थोड़ा करके धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। गतिशील ही गंतव्य को प्राप्त कर सकता है, अगतिशील आगे नहीं बढ़ सकता। गति के लिए धर्मास्तिकाय का सहयोग अपेक्षित होता है और मंजिल पर पहुंचने के बाद ठहरना हो तो अधर्मास्तिकाय का सहयोग रहता है।

हम शास्त्रों का स्वाध्याय करते हैं, प्रवचन सुनते हैं, तत्त्व चर्चा करते हैं, इनसे हमें धर्म बोध, तत्त्व बोध प्राप्त हो सकता है। कई लोग तत्त्व को जानते हैं, पर उसे आचरण में नहीं ला सकते। कईयों में आचरण में लाने की भावना है, पर उन्हें तत्त्व बोध प्राप्त नहीं होता है। जिनमें ज्ञान भी है और आचरण की दक्षता भी है, ऐसे लोग दुनिया में विरले होते हैं। भगवान महावीर अतीन्द्रिय ज्ञान संपन्न थे और फिर अणगार धर्म के आचरण में भी लग गए और बढ़ते-बढ़ते अंतिम मंजिल, परम मंजिल मोक्ष को भी प्राप्त हो गए। अतः व्यक्ति पहले जाने और फिर उसका आचरण करने का प्रयास करे।

क्या, क्यों, कैसे — इन तीन प्रश्नों का उत्तर मिलने पर कई बातों की हमें उपलब्धि हो सकती है। अपनी जिज्ञासा का समाधान इन तीन प्रश्नों के आधार पर तार्किक बुद्धि से करने का प्रयास करना चाहिए। अतः हमें अपने जीवन में धर्म को जानकर, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा से युक्त होकर, जितना संभव हो सके धर्म को अपने आचरण में, भावों में लाने का प्रयास करना चाहिए।

सघन साधना शिविर के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव ने शिविरार्थियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि यह बालक-बालिकाओं का शिविर है। इस शिविर से प्रेरणा और संदेश मिले कि आत्मा निर्मल बने, आचरण संयमयुक्त बन जाए और जीवन में अच्छी स्थिति बने। बालक-बालिकाओं का अच्छा विकास हो और उनमें ज्ञान चेतना जागे। सघन साधना शिविर के बालक-बालिकाओं को पूज्य गुरुदेव ने अपनी जिज्ञासाओं को अभिव्यक्त करने की अनुमति दी तो बालक-बालिकाओं ने अपनी जिज्ञासाओं को प्रस्तुत किया और पूज्य गुरुदेव ने उन्हें मंगल समाधान प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

परिवर्तन और प्रतिक्रिया

सबका चिन्तन समान नहीं होता। कुछ लोग रूढ़ परम्परा को पसंद करते हैं तो कुछ लोग परिवर्तन को पसंद करते हैं। परिवर्तन नहीं होता है तब परिवर्तन चाहने वाले विरोध करते हैं। परिवर्तन होता है तब परिवर्तन न चाहने वाले विरोध करते हैं। आचार्य भिक्षु ने समय-समय पर रूढ़ परम्परा में परिवर्तन किया। जब-जब परिवर्तन किया तब-तब विरोध भी उभरे।

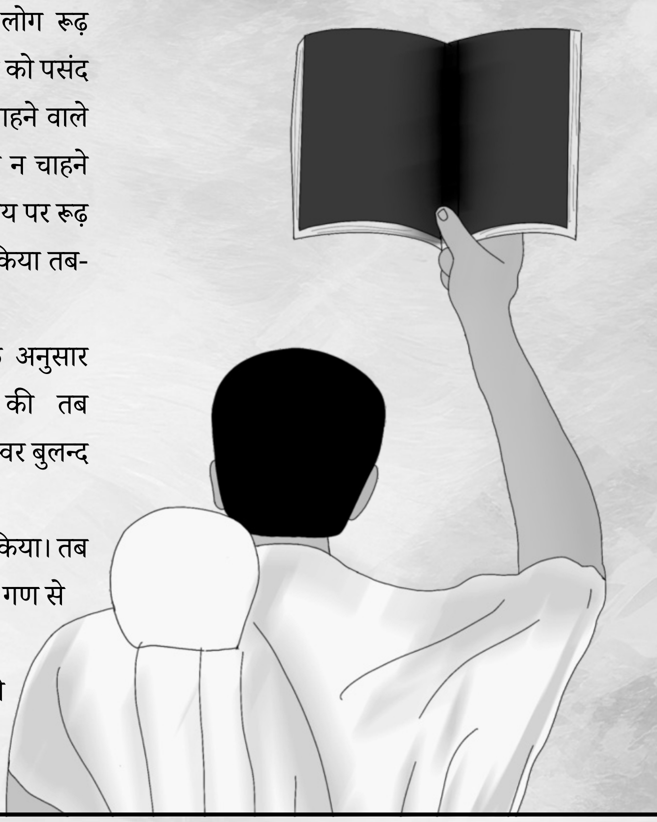

आचार्य भिक्षु ने आचार्य की परम्परा के अनुसार उत्तराधिकारी के मनोनयन की व्यवस्था की तब चन्द्रभाणजी और तिलोकचन्दजी ने विरोध का स्वर बुलन्द किया और गण से अलग हो गये।

आचार्य भिक्षु ने शिष्य परम्परा को समाप्त किया। तब वीरभाणजी ने विरोध का स्वर बुलन्द किया और गण से अलग हो गये।

साध्वी चन्दुजी ने साध्वी वीरांजी आदि को अपनी शिष्या बनाया। तब आचार्य भिक्षु ने उन्हें गण से अलग कर दिया।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

बारह व्रत– भोगोपभोग व्रत

हम मानव जीवन में हैं। जीवन-यापन के लिए हमें कुछ न कुछ वस्तुओं की आवश्यकता रहती ही है। ऐसा कोई नहीं है जिसे किसी भी वस्तु की आवश्यकता न हो। कामनाओं से बँधा हुआ प्राणी नित्य ही उनकी पूर्ति में लगा रहता है। वह सदा सुविधा-साधन सामग्री के संग्रह में व्यस्त रहता है। साधन-सामग्री दो प्रकार की होती हैं– भोग और उपभोग। संक्षेप में हम इन्हें भोगोपभोग कहते हैं।

भोग अर्थात वह वस्तु जो एक बार ही काम आती है, जैसे भोजन, पानी आदि। उपभोग अर्थात वह वस्तु जो अनेक बार काम में आती है, जैसे वस्त्र, अलंकार आदि।

यह व्रत एक बड़े वर्ग को अपने भीतर समेटे हुए है। इसमें समग्र योग्य सामग्री, समग्र अलंकार, समग्र वस्त्र, दातन, मुखवास, मिठाई, नमकीन आदि– प्रत्येक वस्तु पर संयम की प्रेरणा है। यह व्रत हमें प्रेरित करता है कि वस्तुओं का उपयोग हमारी ज़रूरत के अनुसार होना चाहिए, इच्छा के अनुसार नहीं।

जब तक हम सीमा में रहेंगे और संयम के परकोटे में सुरक्षित रहेंगे, तब तक हमारा जीवन भी सुरक्षित रहेगा। अतः सुख की आकांक्षा रखने वाला मनुष्य इस व्रत को अपने जीवन में स्थान दे, सम्मान दे– यही सुखी जीवन का रहस्य है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह श्रावक संदेशिका के 7 पृष्ठ पढ़ने का लक्ष्य रखें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

साहूकार-दिवालिया

कुछ साधु कहते हैं– 'अभी पांचवां अर है, पूरा साधुपन नहीं पाला जा सकता।'

तब स्वामीजी बोले– ऋण पत्र साहूकार और दिवालिया दोनों के लिए लिखा जाता है– 'जब ऋण-दाता मांगेगा तब तुरंत रुपये लौटा देंगे। उसमें कोई आपत्ति नहीं करेंगे। चमकते हुए खरे रुपयें लेंगे।'

पर साहूकार और दिवालिया का पता तो वापस मांगने पर ही चलता है। साहूकार ब्याज-सहित लौटा देता है और दिवालिया मूल से भी मुकर जाता है।

'इसी प्रकार भगवान् ने सूत्र का निरूपण किया, उसके अनुसार जो चलता है वह साधु और पांचवें अर का नाम लेकर जो उसके अनुसार नहीं चलता वह असाधु है।'

क्या आप जानते हैं?

जमींकन्द के त्याग वाले व्यक्ति को आलू, जमींकन्द का सीरा, सूखी जमींकन्द, जमींकन्द का पाउडर व पेस्ट, जैसे-गार्लिक पाउडर, प्याज आदि का अचार आदि का भी भक्षण नहीं करना चाहिए। यदि दिक्कत हो तो उनका आगार रखा जा सकता है। जैसे- हल्दी, सूंठ आदि का।

जमींकन्द की वस्तु जिस तेल में बनाई जाए, उसी तेल में अन्य कोई वस्तु (जमींकन्द कें अतिरिक्त) तली जाए तो जमींकन्द के त्याग वालों को वह वस्तु भी नहीं खानी चाहिए।

मनोज्ञ और अमनोज्ञ दोनों शब्दों को सहन करे साधु : आचार्यश्री महाश्रमण

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के 112वें जन्मोत्सव पर आचार्यवर ने किया श्रद्धार्पण

कोबा, गांधीनगर।
23 अक्टूबर, 2025

गणाधिपति तुलसी के इतिहास की पुनरावृत्ति करवाने वाले महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के 112वें जन्मोत्सव के संदर्भ में समुस्थित जनता को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति के जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता का समागमन हो सकता है। व्यक्ति के जीवन में कभी आरोह की तो कभी अवरोह की स्थिति भी आ जाती है। कभी प्रशंसा से मन आनंदित होता है तो कभी कहीं निंदा भी सुननी पड़ सकती है। साधु को मनोज्ञ और अमनोज्ञ दोनों प्रकार के शब्दों को सहन करना चाहिए।

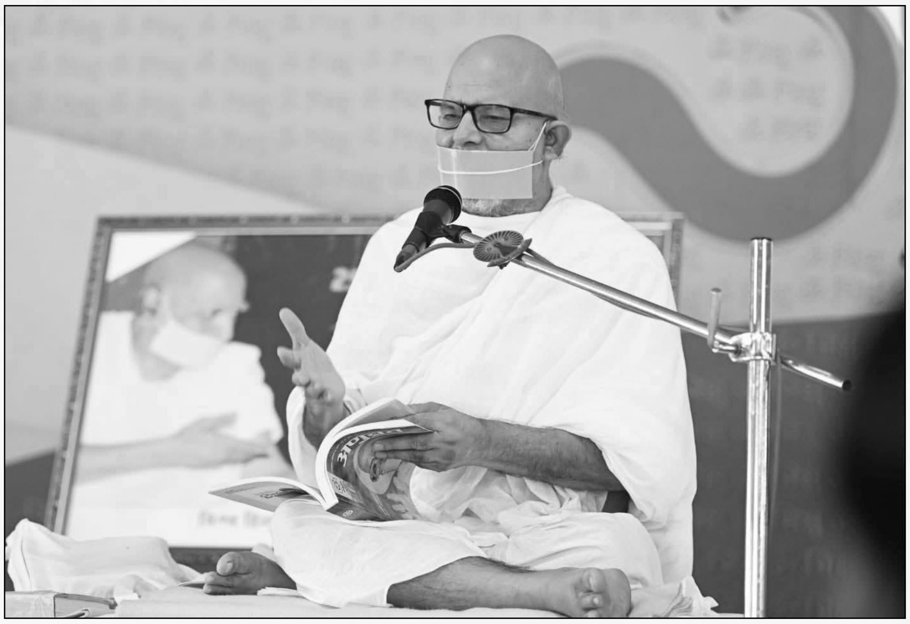

आचार्य श्री ने फरमाया कि आज कार्तिक शुक्ला द्वितीया है। आज से 111 वर्ष पूर्व लाडनूं में खटेड़ परिवार में एक शिशु ने जन्म लिया। जन्म लेना एक सामान्य घटना है। इसी प्रकार मृत्यु भी एक सामान्य व्यवस्था है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जन्म और मृत्यु के बीच के जीवन में व्यक्ति क्या करता है, जीवन कैसा जीता है। आज के दिन जन्मा बालक आगे जाकर आचार्य तुलसी के रूप में प्रख्यात हुआ। पौष कृष्णा पंचमी वि.सं. 1982 में लाडनूं में ही बालक तुलसी ने जीवन के बारहवें वर्ष में संन्यास को स्वीकार कर लिया। उनका आचार्यकाल लगभग साठ वर्षों से अधिक का रहा। तेरापंथ धर्मसंघ के किसी भी आचार्य का इतना लंबा आचार्यकाल नहीं रहा। इस दृष्टि से यह उनके जीवन का एक कीर्तिमान है। हमारे धर्मसंघ के वे पहले आचार्य थे जिन्होंने दक्षिण भारत व कोलकाता तक की यात्रा की। उनका बहुत व्यापक जनसंपर्क था। उनका राजनीति के क्षेत्र में भी वर्चस्व था। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी भी उनसे मिलने के लिए राजस्थान के एक छोटे से गांव सिरियारी में आए थे। ग्रामीण जनता भी उनके संपर्क में आती थी।

उन्होंने अपने जीवन काल में धर्मसंघ के लिए भी अनेक कार्य किए। उनके आचार्यकाल में ही समण श्रेणी का भी जन्म हुआ था। सर्वप्रथम छह बाइयों की दीक्षा हुई थी, जिनमें वर्तमान साध्वीप्रमुखाजी की भी समणी दीक्षा हुई थी। समण श्रेणी देश और विदेश, दोनों जगह अपना योगदान दे रही है। अणुव्रत आंदोलन भी आज ही के दिन, शुक्ला द्वितीया को प्रारंभ हुआ, केवल माह का अंतर है — फाल्गुन माह। आज के दिन को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। अणुव्रत के द्वारा कितना व्यापक कार्य हुआ है। अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाने में वर्तमान में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी प्रमुख संस्था है। इसके कार्यकर्ता अच्छा पुरुषार्थ करते रहें, नैतिकता और संयम के संदेश को फैलाने में अपनी शक्ति का उपयोग करते रहें।

आचार्यश्री तुलसी में पुरुषार्थ और परिश्रमशीलता देखने को मिलती है। आचार्यश्री तुलसी अपने गुरु कालूगणी के प्रति बहुत अच्छी अभिव्यक्ति करते थे। आचार्यश्री तुलसी ने भिक्षु स्वामी के प्रति कितने-कितने गीतों की रचना की है। उन्होंने अपने जीवन काल में ही आचार्य पद का विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञजी को आचार्य घोषित कर दिया। यह उनके जीवन का सबसे विशिष्ट कार्य रहा। मुझे उनके निकट रहने का अवसर मिला, औरों पर भी उनका कितना उपकार रहा है। मैं गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धार्पण करता हूं, समण श्रेणी के प्रति मंगलकामना करता हूं और अणुव्रत के प्रति प्रमोद भावना रखता हूं कि कार्यकर्ताओं का उत्साह बना रहे और वे यथायोग्य अणुव्रत के प्रसार का कार्य करते रहें। आज विश्व हिन्दू परिषद से भी लोग आए हुए हैं। आचार्यश्री तुलसी का विश्व हिन्दू परिषद से भी संपर्क था। अशोकजी सिंहल के साथ भी उनका मिलना हुआ था। कार्यकर्ताओं में अच्छा उत्साह बना रहे।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी जी ने नवम आचार्यश्री तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि गुरुदेव तुलसी का व्यक्तित्व उभयानुकंपी व्यक्तित्व था। उन्होंने अपना विकास किया और अपने परिवार्श्व में रहने वाले साधु-साध्वियों का भी विकास किया। उन्होंने आगमों और दर्शन का गहरा अध्ययन कर, साधु-साध्वियों को अध्यापन करवाकर उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके जीवन में अनेक विरोध हुए। अणुव्रत के विरोध के बावजूद भी उन्होंने अणुव्रत की मशाल को पूरे भारत में प्रज्ज्वलित किया।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के पश्चात् समण श्रेणी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ किशोर मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी। विश्व हिन्दू परिषद अहमदाबाद के मंत्री अमित शाह ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री तुलसी के संसारपक्षीय परिवार की ओर से सुशील खटेड़ व छतरसिंह खटेड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। दीपक कोठारी ने गीत प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की महामंत्री रचना हिरण ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया गया। पूज्य गुरुदेव ने अणुव्रत गीत का आंशिक रूप से संगान किया। अणुव्रत पत्रिका के संपादक संचय जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत